

भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद् (पंजीकृत) चेन्नई

ज्योतिष विशारद परीक्षा : जून 2013

समय : 3 घंटे

प्रश्न पत्र-V

कुल अंक : 50

नोट :- कुल पांच प्रश्नों का उत्तर दें। हर एक भाग में से अनिवार्य प्रश्नों के अलावा कम से कम एक प्रश्न का उत्तर देते हुए शेष तीन प्रश्नों का उत्तर दें। प्रश्न 1 और 6 अनिवार्य हैं। सब प्रश्नों का अंक समान है। भाग एक का उत्तर जैमिनीय आधार पर एवं भाग दो पराशरी सिद्धांत के अनुसार उत्तर देना है।

भाग-I (जैमिनी ज्योतिष)

1. (अनिवार्य) :

- निम्नलिखित कुण्डली के लिए चर दशा की गणना करें।
- क्या जातक भारत में है अथवा विदेश में है और वह किस तरह के व्यवसाय में है? इस पर प्रकाश डालें।

जन्म तिथि: 01-12-1954, समय : सुबह 11 बजे, जन्म स्थान : मुंबई, महिला
लग्न-मकर 12:32, सूर्य-वृश्चिक 15:15, चन्द्रमा-मकर 18:55, मंगल-कुंभ 4:34,
बुध-वृश्चिक 2:03, बृहस्पति(व)-कर्क 6:22, शुक्र(व)-तुला 21:53, शनि-तुला
21:56, राहु-धनु 12:30, केतु-मिथुन 12:30, चन्द्रमा की भोग्य दशा : 3 वर्ष-3
मास-23 दिन

2. निम्नलिखित के लिए संक्षिप्त में टिप्पणी लिखें :-

- कारकांश की भूमिका
- फलादेश में अर्गला का प्रयोग
- त्रिकोण दशा

3. i) प्रश्न 1 में दी गई जातक की कुण्डली के आधार पर ग्रह एवं भाव बल की गणना करें।

ii) प्रश्न 1 में दी गई जातक की कुण्डली के आधार पर भाव लग्न, आरुढ लग्न, राज्य पद और दारा पद की गणना करें।

4. जैमिनी सिद्धांत के अनुसार आयुर्दाय की गणना के नियमों की विवेचना कीजिए।

5. जैमिनी पद्धति के अंतर्गत विभिन्न योगों की व्याख्या करें।

भाग-II (विवाह एवं मेलापक)

6. (अनिवार्य)

i) उदाहरण सहित दिखाए कि कौन सा महादशा और अन्तर्दशा विवाह की सम्भावना में सहायक बनती है?

ii) उदाहरण सहित दिखाए कि गोचर किस प्रकार विवाह की सम्भावना को प्रबल करता है?

7. आप कुण्डली के आधार पर किस प्रकार जान सकते हैं कि जातक अविवाहित रहेगा अथवा विवाह में विलम्ब होगा? निम्नलिखित कुण्डली के आधार पर अपने विचार बताएँ:

जन्म तिथि: 11-03-1984, जन्म समय : रात्री 00-58 बजे, जन्म स्थान : चेन्नई,
विंशोत्तरी भोग्य दशा : मंगल 4 वर्ष, 11 महीने, 3 दिन, पुरुष

लग्न-धनु 01:56, सूर्य-कुंभ 26:47, चन्द्रमा-वृष 27:17, मंगल-वृश्चिक 01:07,
बुध-कुंभ 28:44, बृहस्पति-धनु 15:39, शुक्र-कुंभ 01:47, शनि(व)-तुला 22:33,
राहु-वृष 16:30, केतु-वृश्चिक 16:30

8. निम्नलिखित कुण्डली के आधार पर जातक के वैवाहिक जीवन पर प्रकाश डालें:
जन्म तिथि : 05.08.1984, जन्म समय : सुबह 08.20 बजे, जन्म स्थान : मेरठ,
महिला, भोग्य दशा बृहस्पति 1 वर्ष 6 महीने 12 दिन
लग्न सिंह 22-21, सूर्य कर्क 19-31, चन्द्रमा वृश्चिक 02-04, मंगल वृश्चिक 00-04,
बुध सिंह 15-58, बृहस्पति(व) धनु 10-26, शुक्र सिंह 03-02, शनि तुला 16-29,
राहु वृष 10-30, केतु वृश्चिक 10-30
9. निम्नलिखित के लिए संक्षिप्त में टिप्पणी लिखिए :
- विवाह सम्बंधित भाव
 - विवाह मेलापक में दोषों का मूल्यांकन
 - सप्तम भाव में अशुभ ग्रहों का प्रभाव
 - नाडी दोष के अपवाद
10. निम्नलिखित योगों के आधार पर जातक के वैवाहिक जीवन पर प्रकाश डालिए:
- लग्न में यदि उच्च का शुक्र बैठा हो और उसपर 11 भाव में बैठे शनि की दृष्टि हो ।
 - सप्तम भाव में नीच के शुक्र के साथ बुध बैठा हो और उस पर बृहस्पति की सप्तम दृष्टि हो।
 - मंगल और शनि लग्न में मकर राशि में स्थित हों और सप्तम में बृहस्पति हो।
 - सिंह लग्न हो और सप्तम भाव में सूर्य एवं शनि स्थित हों।
 - चन्द्रमा, शुक्र और बुध सप्तम भाव में मीन राशि में हो और एकादश भाव में बैठे बृहस्पति से दृष्ट हों।